प्रकृति चित्रण

कवि परिचय – बिहारी के बाद पद्माकर रीतिकाल के सबसे अधिक लोकप्रिय कवि हुए हैं। इनका जन्म सन् 1753 में हुआ। ये तैलंग ब्राह्मण थे और बाँदा निवासी मोहनलाल भट्ट के पुत्र थे। बाद में पद्माकर के पिता मोहनलाल भट्ट सागर में बस गए थे। इनके परिवार का वातावरण कवित्वमय था। इनके पिता के अलावा इनके कुल के अन्य अनेक व्यक्ति भी कवि थे। अतः इनके वंश का नाम ही 'कवीश्वर' पड़ गया था। पद्माकर जी मात्र 9 वर्ष की उम्र में ही कविता लिखने लगे थे। ये अनेक राजदरबारों में रहे। बूँदी दरबार की ओर से उन्हें बहुत सम्मान, दान आदि मिला। पन्ना महाराज ने इन्हें बहुत से गाँव दिए। जयपुर नरेश से इन्हें 'कविराज शिरोमणी' की उपाधि मिली।

राजाओं की प्रशंसा में उन्होंने 'हिम्मत बहादुर विरुदावली' 'प्रताप सिंह विरुदावली' और 'जगत विनोद' की रचना की। जीवन के अन्तिम समय में इन्हें कुष्ठ रोग हो गया। उससे मुक्ति के लिए गंगाजी की स्तुति में 'गंगा लहरी' लिखते हुए यहीं उनका 80 वर्ष की आयु में सन् 1833 में निधन हो गया।

पदमाकर जी के रचित ग्रन्थ है – 'पद्माभरण', 'जगद्विनोद', 'आलीशाह प्रकाश', 'हिम्मत बहादुर विरुदावली', 'प्रतापसिंह विरुदावली', 'प्रबोध पचासा', 'गंगा लहरी' और 'राम रसायन'।

पद्माकर जी का सम्पूर्ण जीवन राजाश्रयों में ठाट-बाट पूर्वक बीता। इन्होंने सजीव मूर्तविधान करने वाली कल्पना के सहारे प्रेम और सौन्दर्य का मार्मिक चित्रण किया है। जगह-जगह लाक्षणिक शब्दों के प्रयोग द्वारा वे सूक्ष्म से सूक्ष्म भावानुभूतियों को सहज ही मूर्तिमान कर देते हैं। इनका शृंगार सरस एवं सहज अनुभूति से ओतप्रोत है। भाव-कल्पना के आडम्बर में वे उलझे नहीं है। अनुभावों और भावों के चित्रण तो अत्यधिक मर्मस्पर्शी हैं।

पद्माकर का प्रकृति-चित्रण विशेष रूप से षट्-ऋतु वर्णन बहुत प्रसिद्ध है। इनके ऋतु वर्णन में जीवंतता और चित्रात्मकता के दर्शन होते हैं। अनुप्रास द्वारा ध्वनिचित्र खड़ा करने में ये अद्वितीय हैं। इनमें बिहारी सा वाग्वैग्ध एवं मतिराम की सी भाषा की स्वाभाविक प्रवाहमयता के दर्शन होते हैं। इनकी भाषा में लाक्षणिकता का भी सुन्दर पुट है। सूक्तियों में तो इनकी समता का रीतिकालीन शायद ही कोई कवि है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इनकी भाषागत शक्ति और अनेक रूपता की तुलना तुलसीदास की भाषागत विविधता से की है। यह उनके काव्य की बहुत बड़ी शक्ति की ओर संकेत करता है।

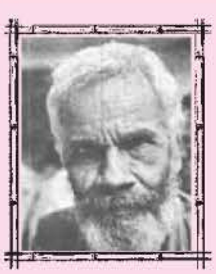

कवि परिचय – नागार्जुन का जन्म बिहार के दरभंगा जिले के सतलखा (ननिहाल) नामक ग्राम में सन् 1911 ई. को हुआ था। इनके पिता तरौनी गाँव में रहते थे। नागार्जुन का बचपन का नाम वैद्यनाथ मिश्र था। जीवन के अभावों ने आगे चलकर इनके संघर्षशील व्यक्तित्व का निर्माण किया। व्यक्तिगत दुःख ने इन्हें मानवता के दुःख को समझने की क्षमता प्रदान की। घुमक्कड़ी और फक्कड़पन नागार्जुन के व्यक्तित्व की दो प्रमुख विशेषताएँ हैं। इन्होंने सम्पूर्ण भारत का भ्रमण किया है, फलतः इन्हें एक जगह टिककर काम करने का अवसर नहीं मिला।

इन्होंने मैथिली और हिन्दी दोनों में रचनाएँ लिखीं। 1935 में 'दीपक' (हिन्दी मासिक) और 1942-43 में विश्वबंधु (साप्ताहिक) पत्रिका का संपादन किया। नागार्जुन को अपने राजनीतिक कार्यकलापों के कारण कई बार जेल की यात्रा भी करनी पड़ी।

इनकी मुख्य काव्य-कृतियाँ हैं – 'युगधारा', 'प्यासी पथराई-आँखे', 'सतरंगे पंखों वाली' और 'भस्मांकुर' (खण्डकाव्य)। इसके अलावा कई कविताएँ अप्रकाशित हैं। नागार्जुन ने कई महत्वपूर्ण उपन्यास भी लिखे हैं, जिनमें 'बलचनामा' 'रतिनाथ की चाची', 'नई पौध', 'कुम्भीपाक', 'उग्रतारा' आदि प्रमुख हैं।

नागार्जुन जीवन के, धरती के, जनता के, तथा श्रम के गीत गाने वाले ऐसे कवि हैं जिनकी रचनाओं को किसी वाद की सीमा में नहीं बाँधा जा सकता। अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व की भाँति इन्होंने अपनी कविता को भी स्वतंत्र रखा है। सहजता नागार्जुन के काव्य की विशेषता है। जटिल से जटिल भाव भी नागार्जुन की लेखनी से निकलकर सहज प्रभाव डालने में सफल हो जाते हैं।

स्वाधीन भारत की कसमसाती भारतीय जनता विशेषतः किसान जीवन की पीड़ाओं को नागार्जुन ने अपनी कविता की विषयवस्तु बनाया है। उनकी काव्य भाषा में एक किसान की सी साफगोई और निर्मम खरापन है। इनकी भाषा-शैली सरल, स्पष्ट तथा मार्मिक प्रभाव डालने वाली है। काव्य विषय इनके प्रतीकों के माध्यम से स्पष्ट उभरकर आते हैं। इनके गीतों में जन-जीवन का संगीत है।

केन्द्रीय भाव

मानवीय संवेदनाओं के संप्रेषण में प्रकृति ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है। प्रकृति ने मनुष्य को न केवल व्यापक दृष्टिकोण प्रदान किया, बल्कि उसने मनुष्य के सौंदर्य-बोध को भी विस्तारित किया। प्रकृति ने मानवीय भावों और विचारों को उदात्त बनाया है। मानवीय जीवन के आधार मूल्यों की अवधारणा में प्रकृति का महत्वपूर्ण योगदान है। प्रकृति मनुष्य की सद्चारिणी शक्ति है। काव्य के क्षेत्र में प्रकृति कवियों को सर्वाधिक प्रभावित करने वाली रही है। कवियों ने कहीं प्रकृति को आधार बनाकर स्वतंत्र दृश्यांकन किया है तो कहीं प्रकृति मानवीय भावना को उद्दीप्त करने वाली रही है, कहीं प्रकृति स्वयं मनुष्य जैसा आचरण करने वाली बन जाती है। इस तरह कविता में प्रकृति अनेक रूपों में प्रस्तुत होती रही है और कविता को सरस तथा आकर्षक रूप प्रदान करती रही है, हिन्दी काव्य साहित्य में प्रकृति सर्वत्र अपनी उपस्थिति से कविता को रमणीय बनाती रही है। कविता जब प्रकृति के साथ रहती है, तब वह सृष्टि की संपूर्णता का बोध भी जगाती रहती है इस आधार पर हिन्दी काव्य साहित्य में प्रकृति समिष्टिबोध जगाने में सदैव समर्थ रही है। जायसी, कबीर, तुलसीदास, सूरदास, पद्माकर, देव, मतिराम, श्रीधर पाठक, रामनरेश त्रिपाठी, प्रसाद, पंत, नागार्जुन आदि कवियों ने अपने काव्य में विस्तार से प्रस्तुत किया है।

पद्माकर रीतिकाल के प्रमुख कवियों में से हैं। उन्होंने अपनी ऋतु-वर्णनपरक कविताओं में प्रकृति का बेहद आकर्षक वर्णन किया है। प्रस्तुत काव्यांशों में पद्माकर ने वसंत, वर्षा और शरद ऋतु का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण किया है। वसंत जब आता है तब केवल प्रकृति ही प्रसन्न नहीं होती है, प्राकृतिक उपादानों को तो वसंत प्रफुल्लित करता ही है। वह मानवीय चेतना में भी उल्लास भर देता है इसलिए कुंजों-कछारों में, देश-देशांतरों में विस्तारित वसंत बृज की गोपियों को भी उल्लासमय बना देता है, वसंत ने केवल गोपियों को प्रभावित नहीं किया है, उसने छबीले गोपों को भी अनुरंजित कर दिया है, पक्षी गण सभी तरह से मुखरित होने लगे हैं। समूची सृष्टि वसंत के रंग में रंग उठी है और सबके तन और मन उत्कंठाओं से भर गए हैं। बर्षा ऋतु का वर्णन पद्माकर ने विरह को बढ़ाने वाली ऋतु के रूप में किया है। बिजली चमक रही है, लौंग की लताएँ लावण्यमय हो उठी हैं। विविध हवाएँ बह रही हैं घटाएँ घिर आई हैं और विरहिणी का धैर्य समाप्त हो रहा है। शरद ऋतु की विशदता का आकर्षक वर्णन पद्माकर के काव्य में प्राप्त होता है। वृंदावन में यमुना के तट पर विस्तारित रास मंडल में शरद का अनूठा विस्तार है। कृष्ण के मयूर मुकुट पर भी शरद की उजास प्रकट हो रही है सभी छंदों में प्रकृति परक हलचलों के साथ, प्राकृत दृश्यों की अनूठी छटा प्राप्त होती है। प्रकृति के साथ, मानवीय भावनाओं का भी हृदयग्राही वर्णन इन दृश्यों में है।

नागार्जुन आधुनिक युग के प्रकृति-प्रेमी कवि हैं- नागार्जुन ने प्रकृति को अनेक रूपों में अपने काव्य में प्रकट किया है। नागार्जुन यायावर कवि थे, इसलिए उनके काव्य में प्रकृति चेतना का व्यापक वर्णन है। प्रस्तुत कविता में उन्होंने हिमालय पर घिरते बादलों के विभिन्न रूपों के साथ उनके द्वारा संवेदित विभिन्न संदर्भों को अभिव्यक्त किया है। कमल, हंस, मृग, आदि बादलों के आगमन से अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हैं। हिमालय की शिखर मालाओं और बादलों का सौन्दर्य दर्शनीय है। संपूर्ण कविता में पावस क्षणों में मेघों की सुरम्य छवियों का चित्रण है। भाषा में चित्रात्मकता है।

ऋतु वर्णन

कूलन में केलि में कछारन में कुंजन में,
क्यारिन में कलित कलीन किलकंत है।
कहैं पदमाकर परागन में पौन में,
पातन में पिक में पलासन पगंत है।
द्वार में दिसान में दुनी में देस देसन हूँ में,
देखौ दीप दीपन में दीपत दिगंत है।
बीथिन में ब्रज में नवेलिन में बेलनि में,
बगन में बागन में बगर्‌यो बसंत है ॥ 1 ॥

और भाँति कुंजन में गुँजरत भीरे भौंर,
औरे डौर झौरन पैं बोरन के वै गए।
कहै पद्‌माकर सु औरे भाँति गलियान,
छलिया छबीले छैल औरे छ्वै छ्वै गए।
औरे भाँति बिहग समाज में अवाज होति,
ऐसे रितुराज के न आज दिन द्वै गए।
औरे रस औरे रीति औरे राग औरे रंग,
औरे तन औरे मन औरे बन ह्वै गए ॥ 2 ॥

चंचला चलाकैं चहूँ ओरन तें चाह भरी,
चरजि गई ती फेरि चरजन लागी री।
कहै पदमाकर लवंगन की लोनी लता,
लरजि गई ती फेरि लरजन लागी री।
कैसे धरौं धीर वीर त्रिबिधि समीरै तन,
तरजि गई ती फेरि तरजन लागी री।
घुमड़ि घुमड़ि घटा धन की घनेरों अबै,
गरजि गई तो फेरि गरजन लागी री ॥ 3 ॥

तालन पै ताल पै तमालन पै मालन पै,
वृन्दावन बीथिन बहार बंसीबट पै।
कहै पदमाकर अखंड रासमंडल पै,
मंडित उमंड महा कालिंदी के तट पै।
छिति पर छान पर छाजत छतान पर,
ललित लतान पर लाड़िली की लट पै।
भाई भली छाई यह सरद जुन्हाई जिहि,
पाई छबि आजु ही कन्हाई के मुकुट पै ॥ 4 ॥

– पद्‌माकर

बादल को घिरते देखा है

अमल धवल गिरि के शिखरों पर,
बादल को घिरते देखा है।
छोटे-छोटे मोती जैसे
उसके शीतल तुहिन कणों को,
मानसरोवर के उन स्वर्णिम
कमलों पर गिरते देखा है,
बादल को घिरते देखा है।

तुंग हिमालय के कन्धों पर
छोटी बड़ी कई झीलें हैं,
उनके श्यामल नील सलिल में
समतल देशों से आ-आकर
पावस की ऊमस से आकुल
तिक्त-मधुर बिस-तंतु खोजते
हंसों को तिरते देखा है।
बादल को घिरते देखा है।

ऋतु बसन्त का सुप्रभात था
मंद-मंद था अनिल बह रहा,
बालारुण की मृदु किरणें थी
अगल-बगल स्वर्णाभ शिखर थे
एक दूसरे से विरहित हो
अलग-अलग रहकर ही जिनको
सारी रात बितानी होती,
निशा काल से चिर-अभिशापित
बेबस उन चकवा-चकई का
वंद हुआ क्रन्दन फिर उनमें
उस महान सरवर के तीरे
शैवालों की हरी दरी पर
प्रणय-कलह छिड़ते देखा है।
बादल को घिरते देखा है।

दुर्गम बर्फानी घाटी में
शत-सहस्त्र फुट ऊँचाई पर
अलख-नाभि से उठने वाले
निज के ही उन्मादक परिमल
के पीछे धावित हो होकर

तरल तरुण कस्तूरी मृग को
अपने पर चिढ़ते देखा है,
बादल को घिरते देखा है।

कहाँ गया धनपति कुबेर वह
कहाँ गई उसकी वह अलका
नहीं ठिकाना कालिदास के
व्योम-प्रवाही गंगाजल का,
ढूँढ़ा बहुत परन्तु लगा क्या
मेघदूत का पता कहीं पर,
कौन बताए वह छायामय
बरस पड़ा होगा न यहीं पर,
जाने दो, वह कवि कल्पित था,
मैंने तो भीषण जाड़ों में
नभचुंबी कैलाश शीर्ष पर
महामेघ को झंझानिल से
गरज-गरज भिड़ते देखा है।
बादल को घिरते देखा है।

– नागार्जुन

◆◆◆

अभ्यास

बोध प्रश्न -

अति लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. कवि के अनुसार 'वनों और बागों' में किसका विस्तार है ?
2. तन, मन और वन में परिवर्तन किसके प्रभाव से दिखाई दे रहा है ?
3. कन्हैया के मुकुट की शोभा क्यो बढ़ गई है ?
4. कवि ने हिमालय की झीलों में किसको तैरते हुए देखा है ?
5. कवि ने बादलों को कहाँ घिरते देखा है ?
6. कौन अपनी अलख नाभि से उठने वाले परिमल के पीछे-पीछे दौड़ता है ?

लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. वसन्त ऋतु के आगमन पर प्रकृति में कौन-कौन से परिवर्तन होते हैं ?
2. यमुना तट पर किसकी छटा बिखरी हुई है ?
3. कवि के अनुसार 'घनेरी घटाएँ' क्या कर रही हैं ?
4. 'निशाकाल से चिर अभिशापित' किसे कहा गया है ?
5. कवि ने भीषण जाड़ों में किसे 'गरज-गरज कर भिड़ते देखा है' ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

1. पद्माकर ने वर्षा ऋतु में प्रकृति का चित्रण किस तरह किया है ? वर्णन कीजिए।
2. कवि के अनुसार वसंत का प्रभाव कहाँ-कहाँ दिखलाई दे रहा है ?
3. नागार्जुन ने 'कवि कल्पित' संदर्भ किसे माना है ? स्पष्ट कीजिए ।
4. नागार्जुन के अनुसार वसंत ऋतु के उषाकाल का वर्णन कीजिए।
5. निम्नलिखित काव्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए-
   (अ) ''कौन बताए वह छायामय .... गरज गरज भिड़ते देखा है।''
   (ब) ''औरे भाँति कुंजन .... औरे बन ह्वै गए।''

ध्यान दीजिए -

अतिशयोक्ति अलंकार -

पड़ी अचानक नदी अपार, घोड़ा कैसे उतरे पार ।
राणा ने सोचा इस पार, तब तक चेतक था उस पार॥

प्रताप के घोड़े का अति तीव्र गति से दौड़ना लोक सीमा का उल्लंघन करता है, अतः यहाँ अतिशयोक्ति अलंकार है।

अतिशयोक्ति अलंकार - जहाँ लोक सीमा का अतिक्रमरण करके किसी वस्तु या विषय का वर्णन बढ़ा-चढ़ाकर किया जाए वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है।

योग्यता विस्तार

1. ऋतुओं पर आधारित कविताओं का संग्रह कीजिए।
2. वर्षा ऋतु में आप अपने विद्यालय/घर अथवा किसी सार्वजनिक स्थल पर एक-एक पौधा लगाकर वर्षभर उसकी देख-रेख करिए।
3. 'वर्षा ऋतु' शीर्षक पर एक निबंध लिखिए।

शब्दार्थ

कूलन = किनारे। **केलि** = क्रीडा। **कुंजन** = बगीचे। **कलित** = शोभित। **कलीन** = कलियों में। **किलकंत** = किलकारी। **पौन** = हवा। **पातन** = पत्तों। **पिक** = कोकिल। **दुनी** = दुनिया। **दीप** = द्वीप। **दीपत** = शोभा, प्रकाश। **दिगंत** = दिशाएँ। **वीथिन** = गलियों। **नवेलिन** = युवतियों। **भीरे** = भीड़। **बौरन** = आम्र मौर। **छ्वै** = छवि। **छवै** = छा गए। **विहग** = पक्षी। **चंचला** = बिजली। **चलाकैं** = चमकाकर। **त्रिविधि समीरै** = शीतल, मंद, सुगंध तीन प्रकार की हवा। **घनेरी** = घनी। **छिति** = पृथ्वी। **छान**= छाजन। **मृगमद** = कस्तूरी। **गौन** = गमन (जाना)। **छाकी** = छकना। **जुन्हाई** = चाँदनी।

अमल = निर्मल। **धवन** = श्वेत। **गिरि** = पर्वत। **तुहिन** = ओस। **तुंग** = ऊँचे। **सलिल** = जल। **तिकत** = तीखे। **बालारुण** = सुबह का सूर्य। **विरहित** = वियोग की पीड़ा। **शैवालों** = काई। **अलख नाभि** = अदृश्य नाभि। **उन्मादक** = नशीले। **परिमल** = पराग। सुगंध। **धावित** = दौड़कर। **अलका** = कुबेर की राजधानी का नाम। **व्योम** = **प्रवाही** - आकाश में बहने वाले। **दुर्गम** = जहाँ जाना कठिन हो।